याद रह जाने वाली दो फिल्में...

वेनिस फिल्म फेस्टिवल में दो फिल्में खास रहीं। ब्रिटिश निर्देशक एंड्रयू हैग की फिल्म 'लैन ऑन पीट' ने मुझे जानवरों के लिए भारत में गलत प्रेम की याद दिलाई।

तमिलनाडु के जल्लीकट्टू उत्सव के खिलाफ कोर्ट के फैसले पर विरोध हुआ था, जिसमें बैलों की हिंसक दौड़ होती है और बैल व कुछ आदमियों की भी मौत हो जाती है। फिल्म में पंद्रह साल के चार्ली की कहानी है, जिसमें चार्ली की जिंदगी को उसके बीमार घोड़े की दौड़ के माध्यम से दिखाया है।

कहानी में चार्ली अपने माता-पिता के साथ कुछ करने के लिए बाहर निकलता है। पिता भी अपने बेटे के लिए भरसक कोशिश करता है कि वह अच्छी जिंदगी बना सके। दिन-रात मेहनत के बाद भी वह दाने-दाने को मोहताज रहते हैं। चार्ली की जिंदगी जैसे-तैसे आगे बढ़ती है। उसे स्कूल में फुटबॉल खेलने का मौका मिलता है, जिसे पूरा करने के लिए उसका पिता बहुत मेहनत करता है, लेकिन पिता की मौत हो जाती है। इसके बाद चार्ली की जिंदगी बिखर जाती है। यह कहानी घोड़े की रेस की तरह आगे बढ़ती है। चार्ली, जो बाद में चोरी करने लगता है और उस महिला की तलाश शुरू करता है, जिसका उसके पिता से संबंध था। इसके आगे इस फिल्म में खास कुछ नहीं है। फिल्म में घोड़े के लिए चार्ली की चिंताओं को जिस तरह दिखाया है, वह कमाल है। मैं सोच रहा था कि इस कहानी के लिहाज से अपनों को देखूं, तो वे किस तरह सोचते होंगे। वे खूनी खेल के लिए लड़ने लगते हैं, जबकि वह खेल बैलों के लिए यातना से कम नहीं है। ये सब कुछ मर्दानगी और संस्कृति के नाम पर हो रहा है। ऐसे परिवेश में फिल्म **'लैन ऑन पीट'** हमें जानवर से प्यार करना सिखाती है। दूसरी फिल्म **'लविंग पाब्लो'** नशे पर है, जिसके लिए स्पेन के फिल्म डायरेक्टर फर्नांडो लियोन डे अरानोवा के प्यार पाब्लो को दो महान कलाकारों जेवियर बारदेम और पेनेलोप क्रूज का साथ मिल गया था। दोनों का ऑन स्क्रीन रोमांस चर्चा में रहा है। बारदेम और क्रूज ने शादी की है। इन दोनों की जोड़ी कोलंबिया के नशे के सौदागर पाब्लो एस्कोबार पर बनी कहानी में नजर आई। बारदेम आला दर्जे के अभिनेता हैं, जिन्हें फिल्म **'नो कंट्री फॉर ओल्डमैन'** में ऐसे किरदार के लिए जाना जाता है, जिसमें उन्होंने पागल कैदी की भूमिका निभाई थी, वहीं वे प्रेमी कलाकार भी रहे।

फिल्म 'लैन ऑन पीट'

फिल्म **'लविंग पाब्लो'** में नशा खरीदने वाले का उनका किरदार शानदार है कि कैसे कोकीन खरीदने वाला अमेरिकी बाजार में छा जाता है, जिसे कोकीन-किंग का नाम मिलता है, लेकिन कभी वह अपने बेटे को यह नशा छूने भी नहीं देता। दूसरी ओर पेनेलोप क्रूज हैं, जिन्होंने पत्रकार के तौर पर भूमिका में जान डाल दी है।

इस फिल्म के निर्देशक अरानोवा का काम भी इसलिए खास है, क्योंकि उन्होंने पाब्लो और उसकी जिंदगी पर लिखी किताब **'वर्जीनिया वालेजो'** को फिल्म के रूप में जीवंत कर दिया। एक इंटरव्यू में अरानोवा ने कहा था कि वालेजो का नजरिया बहुत ही रोचक है। कुछ करीब और कुछ किरकिरा-सा है। इस किताब पर मेरा अनुभव अलग है, जिसमें कोकीन-किंग एस्कोबार की वास्तविकता, उसकी जिंदगी के अंधकार और दर्द की त्रासदी है। यह एक यात्रा है। प्यार करने वाले पाब्लो की नशे के सौदागर बनने के बाद हिंसा और हत्या की दुनिया में आने की कहानी इस फिल्म में है। कैसे वह नशे का कारोबार करते हुए कांट्रेक्ट किलर बन जाता है, काला धन सफेद करता है। इस फिल्म को बहुत ही बारीकी से फिल्माया है। निर्देशक अरानोवा कहते हैं कि पाब्लो की कहानी कोलंबियाई जादू को यथार्थवादी साहित्य के साथ सामने लाती है। इसे ही मैंने फिल्म का रूप दिया है। पाब्लो ने जो कुछ किया, भले ही वह उसके लिए कुछ भी हो, लेकिन उसने परिवार और वर्जीनिया के लिए नरक ही बनाया था। ●

वेनिस से गौतमन भास्करन